



केन्द्र ने कोविड 19 को लेकर राज्यों को जारी किया परामर्श

नई दिल्ली। केन्द्र सरकार ने हाल ही में कोविड 19 संक्रमण में हुई वृद्धि और इसके एक नए वेरिएंट जेएन1 का देश में एक मामला आने पर राज्यों को परामर्श जारी किया है। राज्यों से अपने यहां कोविड 19 की स्थिति पर लगातार नजर बनाए रखने और नियमित तौर पर जिला स्तर की स्थिति को रिपोर्ट करने के लिए कहा गया है। केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय की ओर से जारी परामर्श में राज्यों से कहा गया है कि पर्याप्त संख्या में आरटीपीसीआर टेस्ट होने चाहिए और पॉजिटिव मामलों की जिनोम सीक्वेंसिंग के लिए उन्हें भारतीय साइंस कोव-2 जीनोमिक्स कंसोर्टियम (आईएनएसएसओजी) प्रयोगशाला में भेजना चाहिए।

संसद की सुरक्षा में सेंध पर हंगामा

लोकसभा और राज्यसभा से 78 सांसद निलंबित, अब तक कुल 92 कार्रवाई

नई दिल्ली। लोकसभा और राज्यसभा में सोमवार को विपक्ष ने एक बार फिर संसद की सुरक्षा में चूक का मुद्दा उठाया। सदस्य इस दौरान प्लेकार्ड लेकर पहुंचे और सरकार पर मामले में जवाब देने को लेकर दबाव डालने लगे। दोनों सदनों में नारेबाजी के चलते कार्यवाही बाधित रही। इस दौरान विरोध कर रहे विपक्ष के सांसदों पर कार्रवाई की गई और कुल 78 सांसदों को दोनों सदनों से निलंबित किया गया। 14 सांसदों को पहले ही सदन से निलंबित किया जा चुका है, जिससे इनकी कुल संख्या 92 हो गई है।

इस दौरान लोकसभा से डाकघर विधेयक, 2023 और राज्यसभा से जम्मू और कश्मीर



पुनर्गठन (दूसरा संशोधन) विधेयक, 2023 केंद्र शासित प्रदेश सरकार (संशोधन) विधेयक, 2023 पारित किया गया। दोनों विधेयक दोनों सदनों से पारित होने के कारण संसद की मंजूरी पा गए हैं। लोकसभा में संसदीय कार्यमंत्री ने विपक्ष से सहयोग की अपील की और कहा कि यह लोकसभा का

अंतिम पूर्ण सत्र है और बहुत से विधायी कार्य बाकी हैं।

विपक्ष सहयोग करे और सदन को चलने दे। लोकसभा में अध्यक्ष ओम बिरला ने भी विपक्षी सदस्यों से सदन को चलाने में सहयोग देने की अपील की। बिरला ने एक बार फिर दोहराया कि संसद परिसर की सुरक्षा की

जिम्मेदारी उन पर है और इस संबंध में उन्होंने सभी दलों के नेताओं से चर्चा की है और इस संबंध में उचित कदम उठाए जाएंगे। सरकार से जहां सहयोग की आवश्यकता होगी, सहयोग लिया जाएगा।

बिरला ने विरोध कर रहे सदस्यों से कहा कि कार्यमंत्रणा समिति की बैठक में तय होने के बावजूद सदस्य प्लेकार्ड लेकर आ रहे हैं। इसके बाद सदन की कार्यवाही पहले 12 फिर 2 बजे फिर 2.45 और तीन बजे तक के लिए स्थगित की गई। तीन बजे कार्यवाही शुरू होने पर संसदीय कार्यमंत्री प्रह्लाद जोशी ने 30 सदस्यों को वर्तमान सत्र के बाकी कार्यकाल के लिए निलंबित किये जाने का प्रस्ताव रखा।

अंडरवर्ल्ड सरगना दाऊद की मौत

खबर की पुष्टि करने में असमर्थ हैं, क्योंकि अभी तक इस बात की आधिकारिक पुष्टि नहीं हुई है

नई दिल्ली। 1993 मुंबई बम धमाकों का भगोड़ा मास्टरमाइंड दाऊद इब्राहिम शायद अब इस दुनिया में नहीं है। एक टीवी ने उच्च पदस्थ सूत्रों के हवाले से जानकारी दी है, कि कथित तौर पर रविवार को पाकिस्तान के कराची के एक अस्पताल में उसकी मौत हो गई है। वहीं, कई और रिपोर्ट्स में दावा किया गया है, कि कराची के अस्पताल में मौत होने के बाद उसके शव को कराची के एक कब्रिस्तान में दफना दिया गया है। हालांकि, इस बात की संभावना नग्न है, कि पाकिस्तान दाऊद इब्राहिम की मौत की खबर को सार्वजनिक तौर पर स्वीकार करेगा, लेकिन कई पाकिस्तानी पत्रकारों ने भी कहना शुरू कर दिया है, कि कराची के आगा खां अस्पताल में

दाऊद इब्राहिम की मौत हो गई है। उसे जहर दिए जाने के बाद अस्पताल में भर्ती करवाया गया था। दावा किया गया है, कि पांच गाड़ियों के काफिले का साथ एक शव को कराची के आगा खान अस्पताल से कराची में एक कब्रिस्तान में ले जाया गया और वो शव दाऊद इब्राहिम का था और उसे दफनाया जा चुका है। इसके अलावा, रिपोर्ट ये भी है, कि दाऊद इब्राहिम के समर्थी और पूर्व पाकिस्तानी क्रिकेटर जावेद मियांदाद को उनके घर में एहतियातन नजरबंद कर दिया गया है, ताकि ये मामला सार्वजनिक नहीं हो सके। पूरे पाकिस्तान में कल से ही इंटरनेट सेवाएं बंद कर दी गई हैं और फिलहाल कोई नहीं जानता, कि पाकिस्तान क्या छुपा रहा है। पाकिस्तान में सभी सोशल मीडिया वेबसाइट (एक्स, फेसबुक, इंस्टाग्राम और यूट्यूब) का सर्वर काफी डाउन किया गया है।

मोदी स्मार्ट इंडिया हैकथॉन के प्रतिभागियों से संवाद करेंगे

बीएनएम@नई दिल्ली

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी मंगलवार को रात 9:30 बजे वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से स्मार्ट इंडिया हैकथॉन 2023 के ग्रैंड फिनाले के प्रतिभागियों के साथ बातचीत करेंगे। इस अवसर पर प्रधानमंत्री प्रतिभागियों को संबोधित भी करेंगे।

प्रधानमंत्री कार्यालय (पीएमओ) ने सोमवार को एक बयान जारी कर यह जानकारी दी। बयान में कहा गया है कि प्रधानमंत्री के युवा-नेतृत्व वाले विकास के दृष्टिकोण के अनुरूप, स्मार्ट इंडिया हैकथॉन (एसआईएच) छात्रों को सरकार के मंत्रालयों और विभागों, उद्योगों और अन्य संगठनों की गंभीर समस्याओं को हल करने के लिए एक मंच प्रदान करने की एक राष्ट्रव्यापी पहल है। 2017 में लॉन्च किए गए स्मार्ट इंडिया हैकथॉन



ने युवा इनोवेटर्स के बीच बड़े पैमाने पर लोकप्रियता हासिल की है। पिछले पांच संस्करणों में, विभिन्न डोमेन में कई नवीन समाधान उभरे हैं और स्थापित स्टार्टअप के रूप में सामने आए हैं।

इस साल एसआईएच का ग्रैंड फिनाले 19 से 23 दिसंबर तक आयोजित किया जा रहा है। एसआईएच 2023 में, 44000 टीमों से 50 हजार से अधिक विचार प्राप्त हुए, जो एसआईएच के पहले संस्करण की तुलना में लगभग सात गुना वृद्धि है। देशभर के 48

नोडल केंद्रों पर आयोजित होने वाले ग्रैंड फिनाले में 12,000 से अधिक प्रतिभागी और 2500 से अधिक सलाहकार भाग लेंगे। अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी, स्मार्ट शिक्षा, आपदा प्रबंधन, रोबोटिक्स और ड्रोन, विरासत और संस्कृति आदि सहित विभिन्न विषयों पर समाधान प्रदान करने के लिए इस वर्ष ग्रैंड फिनाले के लिए कुल 1282 टीमों को शॉर्टलिस्ट किया गया है।

भाग लेने वाली टीमों 25 केंद्रीय मंत्रियों और राज्य सरकारों के 51 विभागों द्वारा पोस्ट किए गए 231 समस्या विवरणों (176 सॉफ्टवेयर और 55 हार्डवेयर) से निपटेंगी और समाधान प्रदान करेंगी। स्मार्ट इंडिया हैकथॉन 2023 का कुल पुरस्कार 02 करोड़ रुपये से अधिक है, जहां प्रत्येक विजेता टीम को प्रति समस्या विवरण 01 लाख रुपये का नकद पुरस्कार दिया जाएगा।

प्रशंसा

सरकारों द्वारा जो धन विकास पर खर्च किया जाता है, वह जनता का ही होता है

जनता से छिपाना नहीं है गुड गवर्नेंस: मनोज सिन्हा

नई दिल्ली। जम्मू कश्मीर के उपराज्यपाल मनोज सिन्हा ने सोमवार को दिल्ली विश्वविद्यालय के वाइस रीगल लॉज स्थित कन्वेंशन हॉल में कहा कि जनता से छिपाना गुड गवर्नेंस नहीं है, अपितु जनता को बताना ही गुड गवर्नेंस है।

सिन्हा डीयू में जी-20 कनेक्ट व्याख्यान श्रृंखला के तहत गुड गवर्नेंस (सुशासन) पर आयोजित एक व्याख्यान कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि अपना व्याख्यान प्रस्तुत कर रहे थे। कार्यक्रम के दौरान अपने अध्यक्षीय भाषण में डीयू कुलपति प्रो. योगेश सिंह ने कहा कि जब हम गुड गवर्नेंस पर बात करते हैं तो यह सम्पूर्ण समाज के लिए होनी चाहिए।



मनोज सिन्हा ने अपने व्याख्यान में आगे कहा कि सरकारों द्वारा जो धन विकास पर खर्च किया जाता है, वह जनता का ही होता है, इसलिए जनता को बताया जाए कि कहां क्या चल रहा है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में गुड गवर्नेंस की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री के प्रयासों का ही परिणाम है कि

आज जनता ऑनलाइन जान सकती है कि किस काम पर कितना पैसा खर्च किया जा रहा है। सिन्हा ने जम्मू कश्मीर का जिक्र करते हुए कहा कि वहां पर 90 प्रतिशत सरकारी सेवाएं ऑटो अपील मोड में हो चुकी हैं। इस माध्यम से लोगों की फीडबैक और सुझाव भी प्रशासन तक पहुंचते हैं और समय पर समाधान संभव हुआ है। लोगों को इस व्यवस्था से काफी सुविधा हो रही है। उन्होंने कहा कि जम्मू कश्मीर में भूमि रिकॉर्ड की काफी समस्या थी, जिसे ठीक कर दिया गया है। जनता के फीडबैक पर जरूरी बदलाव किए जा रहे हैं।

उपराज्यपाल ने कहा कि गुड गवर्नेंस का दूसरा पहलू यह है कि हमारे युवाओं की प्रतिभा

का सही और उचित इस्तेमाल हो। निश्चित रूप से विकसित भारत की यात्रा में इसका बड़ा योगदान होगा। सिन्हा ने कहा कि अतीत में भारत अपनी नॉलेज इकनोमी से सोने की चिड़िया था। दुनिया की जीडीपी में हमारा 25 प्रतिशत शेयर शिक्षण संस्थाओं के कारण ही था।

इस अवसर पर कुलपति प्रो. योगेश सिंह ने अपने अध्यक्षीय भाषण में आगे कहा कि भारतीय सभ्यता की पहचान वसुधैव कुटुंबकम से है। उन्होंने देश में गुड गवर्नेंस की जरूरत पर भी विस्तार से बात की। कुलपति ने कहा कि हमारा देश कई क्षेत्रों में अच्छा कर रहा है।

श्रीलंका भारत के विकास में महत्वपूर्ण भागीदार है:

लोक सभा अध्यक्ष

नई दिल्ली। श्रीलंका की संसद के अध्यक्ष महिंदा यापा अबेवर्धना के नेतृत्व में भारत यात्रा पर आए संसदीय शिष्टमंडल ने सोमवार को संसद भवन परिसर में लोक सभा अध्यक्ष ओम बिरला से मुलाकात की। बिरला ने भारत यात्रा पर आए शिष्टमंडल का स्वागत करते हुए कहा कि दोनों देश न केवल पड़ोसी हैं बल्कि इतिहास, संस्कृति और लोकतांत्रिक मूल्य की साझी विरासत के कारण एक दूसरे के साथ जुड़े हुए हैं। दोनों देशों में लोकतंत्र के महत्व का उल्लेख करते हुए बिरला ने कहा कि लोकतंत्र के साझे मूल्य प्रगति और एकता की दिशा में हमारा मार्गदर्शन करते हैं। उन्होंने यह भी कहा कि लोकतांत्रिक सिद्धांतों की प्रतिबद्धता के फलस्वरूप हमारे समाज सशक्त हुए हैं।

संक्षिप्त समाचार

शेखपुरा में आशीर्वाद गोल्ड लोन बैंक से अपराधियों ने लूटे दो करोड़ का सोना एवं दो लाख कैश

पटना। बिहार के शेखपुरा में बदमाशों ने लूट की बड़ी घटना को अंजाम दिया है।

बदमाशों ने सोमवार दोपहर

आशीर्वाद गोल्ड लोन बैंक से दिनदहाड़े दो करोड़ के सोना और दो लाख कैश की लूट कर ली।

दोपहर दो बजे छह बदमाश बैंक के अंदर घुसे और हथियार की नोक पर

20 मिनट तक लूटपाट करते रहे। घटना जिले के बरबीघा नगर स्थित बैंक की है। घटना के बाद बैंक कर्मियों ने इस बात की जानकारी बरबीघा थाना को दिया। जिसके बाद बरबीघा थाना की टीम बैंक पहुंची और छानबीन में जुट गई है। एसपी कार्तिकेय शर्मा ने बताया कि पुलिस मामले की जांच में जुट गई है।

बैंक असिस्टेंट मैनेजर विकास कुमार के अनुसार आधा दर्जन की संख्या में बैंक लुटेरे आये और पहले गोल्ड लोन लेने के बारे में पूछा फिर थोड़ी देर बाद बैंक में काम कर रहे तीनों कर्मचारियों को गन पॉइंट पर ले लिया। करीब 20 मिनट तक बैंक के सभी स्टाफ के साथ मारपीट करते हुए गन पॉइंट पर सभी लिया और तिजोरी को खुलवाकर पांच किलो सोना जिसकी कीमत लगभग 2 करोड़ रुपये एवं नगद लूट कर फरार हो गए।

उन्होंने बताया कि बैंक के लॉकर में ग्राहकों के सोने रखे गये थे जो 228 पैकेट में रखा हुआ था, जिसमें से 224 पैकेट लुटेरा लेकर फरार हो गया।

लालू की पार्टी फिर जीरो पर आउट होगी भाजपा का रथ नहीं रोक पाएगी: सुशील कुमार मोदी

बीएनएम@पटना

पूर्व उपमुख्यमंत्री एवं राज्यसभा सांसद सुशील कुमार मोदी ने कहा कि लालू प्रसाद प्रधानमंत्री मोदी की सरकार उखाड़ फेंकने की बड़ी-बड़ी बातों से केवल अपने बचे-खुचे समर्थकों को बहला सकते हैं। वे भूल गए कि 2019 के संसदीय चुनाव में उनकी पार्टी जीरो पर आउट हुई थी, जबकि भाजपा पहले से बड़े बहुमत के साथ सत्ता में लौटी थी।

सुशील मोदी ने सोमवार को बयान जारी कर कहा कि लालू प्रसाद और नीतीश कुमार ने सारा जोर लगा कर जो गठबंधन बनाया, वह तीन शीर्ष बैठकों के बाद भी जहां का तहां खड़ा है। नौ दिन चले अड़ाई कोसर वाली कहावत इन पर लागू होती है। उन्होंने कहा कि



पिछले चुनाव की घोषणा 10 मार्च को हुई थी। इस हिसाब से 2024 के चुनाव लिए केवल 80 दिन बचे हैं और विपक्ष के पास आज भी

कोई चेहरा नहीं है। उन्होंने कहा कि 19 दिसम्बर की बैठक में इंडी गठबंधन अपना संयोजक ही तय कर ले,

तो बड़ी बात। पीएम पद का उम्मीदवार तय करना दूर की कौड़ी होगी। राहुल-लालू - नीतीश मंडली के पास रंभाजपा हटाओ, भ्रष्टाचारी बचाओ के नकारात्मक नारे के अलावा देश-हित का कोई ब्लू-प्रिंट नहीं है। चेहरा-विहीन विपक्ष के मुकाबले भाजपा के पास नरेंद्र भाई मोदी जैसा प्रभावी नेतृत्व है, देशव्यापी संगठन है और किसानों-गरीबों-महिलाओं के लिए 10 साल में किये गए कल्याणकारी कार्यों की शानदार उपलब्धियाँ हैं। उन्होंने कहा कि धारा -370 हटा कर आतंकवाद पर चोट, तीन तलाक से राहत, महिला आरक्षण बिल से नारी सशक्तीकरण और अगले महीने 22 जनवरी को अयोध्या के राम मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा कर प्रधानमंत्री मोदी जो विश्वास अर्जित करेंगे, वह अजेय होगा।

फाइनेंस कर्मी से लूटकांड मामले में राजा यादव गिरफ्तार, लूटी हुई मोबाइल बरामद

बीएनएम@अररिया

फुलकाहा थाना पुलिस ने 11 दिसंबर को फाइनेंस कर्मी उदयकांत मिश्रा से हुए एक लाख 36 हजार 990 रुपये लूटकांड मामले में एक आरोपित को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने इनके पास से फाइनेंस कर्मी से लूटी हुई मोबाइल बरामद किया है। पकड़ा गया आरोपित फुलकाहा थाना क्षेत्र के भोडहर के रहने वाले चंद्र मोहन यादव का 30 साल का पुत्र राजा यादव है।

उल्लेखनीय है कि 11 दिसंबर को आरबीएल फिनसर्व के फाइनेंस कर्मी मधेपुरा के उदाकिशुनगंज के कुमारखंड निवासी उदयकांत मिश्रा पिता- गोपाल मिश्रा से बाइक पर सवार दो अज्ञात बदमाशों ने हथियार का



भय दिखाकर एक लाख 36 हजार 990 रुपये लूट लिए थे। नगद सहित मोबाइल और अन्य कागजात को बदमाशों ने लूट लिया था। पुलिस मामले में तकनीकी अनुसंधान का सहारा लेते हुए मोबाइल लोकेशन के आधार पर राजा यादव को गिरफ्तार किया।

घटना के संबंध में फुलकाहा थाना में

प्राथमिकी कांड संख्या -190/23 दिनांक- 12.12.2023 दर्ज किया गया था। फारबिसगंज एसडीपीओ खुशरू सिराज ने राजा यादव की गिरफ्तारी की पुष्टि करते हुए अन्य आरोपितों की गिरफ्तारी एवं लूट की सामग्री की बरामदगी के लिए छापेमारी करने की बात कही।

पटना उच्च न्यायालय के न्यायाधीश ने नवादा में परिवार न्यायालय भवन की रखी आधारशिला

नवादा। पटना उच्च न्यायालय न्यायाधीश सह नवादा जिले के निरीक्षी न्यायाधीश न्यायमूर्ति जितेंद्र कुमार ने सोमवार को नवादा सिविल कोर्ट का निरीक्षण किया। इस दौरान जिला अधिवक्ता संघ के पदाधिकारियों ने न्यायालय से संबंधित कई मांगों से उन्हें अवगत कराया। उन्होंने नवादा के जिला एवं सत्र न्यायाधीश पुरुषोत्तम मिश्रा को अधिवक्ताओं की समस्याओं पर विशेष तौर पर ध्यान देकर निदान करने के भी निर्देश दिए। निरीक्षी न्यायाधीश न्यायमूर्ति जितेंद्र कुमार के साथ ही जिला एवं सत्र न्यायाधीश पुरुषोत्तम मिश्रा, जिला विधिक सेवा प्राधिकार की सचिव सरोज कीर्ति ने लोक अदालत भवन की आधारशिला रखी।

इस अवसर पर जिला अधिवक्ता संघ के अध्यक्ष अरुण कुमार सिंहा, महासचिव संत शरण शर्मा, एडवोकेट असोसिएशन के महासचिव निरंजन कुमार सिंह उपस्थित थे। निरीक्षण न्यायाधीश न्यायमूर्ति जितेंद्र कुमार ने परिवार न्यायालय भवन का भी शिलान्यास किया। इसके साथ ही न्यायालय का निरीक्षण कर कई आवश्यक निर्देश दिये। उन्होंने अधिवक्ता संघ के सदस्यों के व्यवहार न्यायालय के रिकॉर्ड रूम में व्याप्त कुव्यवस्था की ओर ध्यान आकृष्ट करते हुए रिक्त पड़े न्यायाधीश के पदों पर नियुक्ति के अनुरोध को स्वीकार करते हुए जल्द समस्या के समाधान का आश्वासन दिया। मौके व्यवहार न्यायालय, नवादा के कई न्यायाधीश तथा अधिवक्ता उपस्थित थे। अधिवक्ताओं ने अपनी समस्याओं से भी पटना उच्च न्यायालय के न्यायाधीश ने मूर्ति जितेंद्र कुमार को कवगत कराया। इसके बाद उन्होंने जिला एवं सत्र न्यायाधीश को सभी व्यवस्था को बेहतर तरीके से करने की जिम्मेदारी सौंपी।

सूक्ष्म सिंचाई योजना किसानों के लिए है कारगर

50 फीसदी जल तो 35 फीसदी उर्वरक की होती है बचत

कैमूर। बिहार एक कृषि प्रधान राज्य है। यहां की अधिकांश आबादी कृषि पर ही निर्भर है। खेती को सुगम बनाने और किसानों की आय बढ़ाने के लिए सरकार कई योजनाएं चला रही है। इसी में से एक है सूक्ष्म सिंचाई योजना। इस योजना के जरिए किसानों की पटवन की समस्या को दूर करने का प्रयास है। सरकार इस पर अनुदान भी दे रही है।

उद्यान पदाधिकारी सूरज पांडेय ने बताया कि सूक्ष्म सिंचाई योजना के तहत हर खेत तक सिंचाई के लिए पानी पहुंचाने को लेकर किसानों को व्यक्तिगत नलकूप योजना का लाभ दिया जा रहा है। इसके लिए कैमूर जिला के वैसिकिसन जो सूक्ष्म सिंचाई (ड्रिप, मिनी स्प्रिंकलर, माइक्रो स्प्रिंकलर) पद्धति से फसलों की सिंचाई करेंगे, उन्हें

सूक्ष्म सिंचाई प्रणाली से 50 प्रतिशत तक जल की होती है बचत

उद्यान पदाधिकारी सूरज पांडेय ने बताया कि इस योजना का मुख्य उद्देश्य यही है कि किसानों को कम लागत में अधिक पैदावार मिले। साथ ही सिंचाई के दौरान पानी की बचत हो और ग्राउंड वाटर लेवल बना रहे। इससे जल उपयोग की क्षमता को बढ़ावा मिलेगा। साथ ही उन्नत तकनीक से सिंचाई करने पर लगभग 50 प्रतिशत जल की बचत होगी और 30 से 35 प्रतिशत उर्वरक की खपत में कमी आएगी। किसानों को इसका यह फायदा होगा कि उच्च गुणवत्ता वाला फसल मिलेगा। इस योजना का लाभ लेने के लिए किसानों को किसान पंजीयन संख्या और जमीन का रसीद होना अनिवार्य है। किसी भी प्रकार की समस्या होने पर संबंधित प्रखंड से उद्यान पदाधिकारी से जानकारी हासिल कर सकते हैं।



व्यक्तिगत नलकूप योजना का लाभ दिया जाएगा।

लघु व सीमांत किसानों को 80 फीसदी तक मिलेगा अनुदान

उद्यान पदाधिकारी सूरज पांडेय ने बताया कि सूक्ष्म सिंचाई के लिए लघु व सीमांत किसानों

को 80 फीसदी अनुदान और बड़े रैयतदार किसानों को 70 फीसदी अनुदान देने का प्रावधान है।

साथ ही बोरिंग करने के लिए अधिकतम 40 हजार अनुदान दिया जाएगा। इसमें किसानों को 160 फीट तक बोरिंग करानी होगी। इसके अलावा किसान समरसेबल

डालना चाहते हैं तो 25 हजार बोरिंग के लिए और 15 हजार मोटर के लिए दिया जाएगा। इस योजना का लाभ लेने के लिए किसान उद्यान विभाग के वेबसाइट horticulture.bihar.gov.in पर जाकर ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं। यहां से अप्लाई कर सकते हैं।

कैशियर ने खुद रची थी अपहरण की साजिस, परत दर परत खुल रही कलई

बीएनएम@मोतीहारी

कथित रूप से अपहृत बैंक ऑफ इंडिया जिवधारा के कैशियर कुंदन कुमार की बरामदगी के बाद पुलिस अनुसंधान में घटनाक्रम परत दर परत खुलता जा रहा है। पुलिस की माने तो कुंदन कुमार खुद ही अपहरण के नाटक किया था।

साथ ही इस कथित अपहरण कांड में सेक्स और ब्लैकमेलिंग के एंगल भी अनुसंधान में सामने आए हैं। ब्लैकमेलिंग के माध्यम से कैशियर से 20 लाख से



अधिक की वसूली की बात कही जा रही। मामले के अनुसंधान का मोनेटरिंग आईपीएस श्री राज कर रहे हैं।

पुलिस ने गुप्त सूचना के आधार पर एक महिला के घर से

कैशियर को बरामद किया। कैशियर खुद ही मुजफ्फरपुर और मोतिहारी के कई स्थानों पर घूमता रहा है और मैसेज के माध्यम से अपहरण की बात कहता रहा। उल्लेखनीय है कि

अपहरण कांड में सेक्स और ब्लैकमेलिंग के एंगल भी अनुसंधान में सामने आए हैं...

गत दिनों कैशियर के अपहरण की प्राथमिकी पिपरा कोठी थाने में दर्ज की गई थी उसके बाद पिपरा कोठी थानाध्यक्ष मनोज कुमार सिंह ने मामले में अनुसंधान शुरू कर दी। कैशियर कुंदन चकिया थाना क्षेत्र का रहने वाला है।

डीएलसीसी व डीएलआरसी की हुई समीक्षा



बीएनएम@मोतीहारी

नगर स्थित राधाकृष्णन भवन सभागार में सोमवार को जिलाधिकारी सौरभ जोरवाल की अध्यक्षता में जिला स्तरीय परामर्शदात्री समिति एवं जिला स्तरीय समीक्षा समिति की संबंधित पदाधिकारियों के साथ समीक्षा बैठक आयोजित की गई।

उक्त समीक्षा बैठक के क्रम में निर्देश देते हुए जिलाधिकारी श्री जोरवाल ने कहा कि सितंबर 2023 तिमाही के वार्षिक साख योजना, जामा साख अनुपात, केसीसी, प्रधानमंत्री रोजगार योजना, प्रधानमंत्री स्व-निधि योजना, प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना,

अटल पेंशन योजना की समीक्षा की गई। जिलाधिकारी द्वारा केसीसी, बीमा योजना एवं खाते खोलने में शत-प्रतिशत लोगों की भागीदारी हेतु बैंकों को निर्देश दिया गया। उन्होंने निर्देश देते हुए कहा कि केसीसी, बीमा योजना एवं खाता खोलने में शत-प्रतिशत लोगों की भागीदारी सुनिश्चित करने हेतु बैंक अपना कार्य का ससमय पूर्ण करें। इस अवसर पर अग्रणी जिला प्रबंधक संजय कुमार सिंह, आरबीआई अधिकारी श्रेय चौधरी, जिला प्रबंधक नाबाई आनंद ऊतिरेक, क्षेत्रीय प्रबंधक उत्तर बिहार ग्रामीण बैंक के अपर आयुक्त, जिला संपर्क अधिकारी के अलावे अन्य बैंकों के जिला समन्वयक उपस्थित रहे।

दूसरी बार राजद के प्रखंड अध्यक्ष बने सुजीत पूर्व रास सदस्य स्व मोतिउर्रहमान की मनायी गई 16 वीं पुण्यतिथि



कौमी एकता फ्रंट के द्वारा आयोजित किया गया पुण्यतिथि कार्यक्रम

कार्यक्रम के उपरांत मोतिउर्रहमान एजुकेशनल हॉल का किया गया शिलान्यास

बीएनएम@केसरिया

बीएनएम@हरसिद्धि। युवा राजद के जिलाध्यक्ष मो असलम ने संगठन का विस्तार करते हुए सुजीत कुमार को हरसिद्धि प्रखण्ड अध्यक्ष के पद पर मनोनीत किया है। हरसिद्धि वार्ड एक के निवासी सुजीत की संगठन के प्रति कार्य को देखते हुई पार्टी आलाकमान ने उन्हें यह जिम्मेवारी दी है। नवमनोनीत प्रखण्ड अध्यक्ष ने कहा कि पार्टी ने जो जिम्मेवारी दी है

उस पर खरा उतरने का हरसंभव प्रयास करूंगा। इनके मनोनयन पर पूर्व प्रत्याशी नागेंद राम, सुरेन्द्र कुमार यादव, दुन्ना पाल, विनय सहनी, मंटू सिंह, अरुण कुमार सिंह, चुमन सिंह, मोहनलाल सहनी, कलाम मियाँ, अफजल खां, खुशींद आलम, जयप्रकाश कुमार, आशिक राज, निरंजन कुमार सहित अन्य ने हर्ष व्यक्त किया है।

पूर्व राज्यसभा सांसद स्व मोतिउर्रहमान की 16 वीं पुण्यतिथि के अवसर पर सोमवार को केसरिया स्थित मदरसा में एक कार्यक्रम आयोजित किया गया।

कौमी एकता फ्रंट द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में विभिन्न दल से जुड़े लोग शामिल हुए। सर्वप्रथम उपस्थित अतिथियों ने स्व



रहमान के तैलचित्र पर पुष्प अर्पित कर उन्हें याद किया। स्व. रहमान के पुत्र पूर्व विधायक फैसल रहमान ने कहा कि पूर्व सांसद स्व रहमान क्षेत्र में अनवरत विकासात्मक कार्य किया। वे सभी वर्ग व समुदाय को एक साथ लेकर चलने में विश्वास रखते थे। कार्यक्रम को जदयू के प्रदेश सचिव राजकिशोर ठाकुर, कैप्टन अब्दुल हमीद, मोहिबुल हक, रवींद्र सिंह बेरुआर सहित अन्य ने भी संबोधित किया। कार्यक्रम के उपरांत विधान पार्षद व

पूर्व विधायक ने केसरिया मदरसा के परिसर में मोतिउर्रहमान एजुकेशनल हॉल का शिलान्यास किया। इस हॉल का निर्माण विधान पार्षद श्री सिंह के निजी कोष से कराया जाएगा। कार्यक्रम की अध्यक्षता सुजीत कुमार उर्फ चुन्नु सिंह व संचालन जदयू नेता सह कौमी एकता फ्रंट के अध्यक्ष वसील अहमद खां ने किया। मौके पर नप के पूर्व मुख्य पार्षद रजनीश कुमार पाठक, काँग्रेस प्रखण्ड अध्यक्ष अफसर खान, शिक्षक नेता सीताराम यादव, नेजाम खां, राजद नेता हातिम खां, अजीत कुमार सहनी, सदाब अहमद खां, नितेश चंद्रवंशी, युवा राजद के पूर्व जिलाध्यक्ष हामिद रजा, पप्पू पाण्डेय, सुनील सिंह, फारुख आजम, पूर्व मुखिया वीरेंद्र राय, हरिशंकर पासवान सहित अन्य मौजूद थे।

समाजसेवा डायट के कर्मचारियों के साथ नवनियुक्त शिक्षकों ने भाग लिया

डायट छतौनी में रक्तदान शिविर का आयोजन

मोतिहारी। जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डायट) छतौनी, मोतिहारी, पूर्वी चंपारण द्वारा शनिवार को सदर अस्पताल मोतिहारी के ब्लड बैंक के सहयोग से रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। इस रक्तदान शिविर में डायट के कर्मचारियों के साथ-साथ बीपीएससी द्वारा नवनियुक्त शिक्षकों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया।

डायट की प्रभारी प्राचार्य ने इस रक्तदान शिविर का उद्घाटन किया। शिविर का उद्घाटन करते हुए प्रभारी प्राचार्य प्रतिभा कुमारी ने बताया कि रक्तदान महादान है। रक्तदान करके हम दूसरे लोगों का जीवन बचा सकते हैं। रक्तदान करने से किसी भी प्रकार की समस्या नहीं होती है। रक्तदान करने वालों को कभी भी उच्च रक्तचाप नहीं होता है। सभी व्यस्क व्यक्तियों को साल में 2 बार अवश्य ही रक्तदान करना चाहिए। इससे व्यक्ति स्वस्थ



भी रहता है। इस मौके पर डायट के प्रधान लिपिक सुजीत कुमार, अभिषेक कुमार, गौरव कुमार, सूरज पटेल, संतोष कुमार सिंह, रिया सिंह, अंकिता श्रीवास्तव, शुभम मिश्रा आदि ने रक्तदान किया।

इस मौके पर डायट के वरीय व्याख्याता ज्ञानवर्धन कंठ, नूर आलम, शिवनाथ प्रसाद, उमाशंकर प्रसाद, गीता कुमारी, विजय कुमार

सिंह आदि मौजूद थे। रक्तदान को सफल बनाने के लिए सदर अस्पताल के ब्लड बैंक के नोडल पदाधिकारी डॉ. गंगाधर तिवारी, इंचार्ज कृष्णा कुमार यादव, मो. तबरेज अख्तर, मो. फिरोज आलम, अरविंद कुमार, प्रभात कुमार आदि मौजूद थे। किसी प्रकार की आपात स्थिति से निपटने के लिए एम्बुलेंस की व्यवस्था भी की गई थी।

MADAN RAJ NURSING HOME

★ **Dr. C.B. Singh**
MBBS

★ **Dr. Khushboo Kumari**
MBBS, MD
(Obstetrics & Gynecology)

★ **Dr. Vibhu Prashar**
MBBS, MD
(Critical Care & Anthropology)

24-Hour Emergency Service

SERVICE AVAILABLE

- General & Laparoscopic Surgeon
- Orthopedic & Trauma Surgeon
- All Type & Cbs & Gynee Services
- 24x7 Smart Advanced ICU Services
- Daily Cancer Clinic

HOSPITAL ROAD MOTIHARI, (BIHAR)

Contact No.- 9801637890, 6200480505, 9113274254

आचार्यकिशोर कुणाल ने सैड आर्टिस्ट मधुरेन्द्र को किया सम्मानित

बीएनएम@मोतिहारी

पटना महावीर मंदिर न्यास समिति के सचिव व चर्चित आईपीएस आचार्य किशोर कुणाल ने प्रसिद्ध सैड आर्टिस्ट मधुरेन्द्र को सम्मानित किया है।

पटना गांधी मैदान में सेंटर फॉर रीडरशिप डेवलपमेंट (सीआरडी) द्वारा आयोजित पुस्तक मेला के समापन समारोह के अवसर पर आचार्य किशोर ने अंतर्राष्ट्रीय सैड आर्टिस्ट मधुरेन्द्र का नाम बिहार की महान हस्तियां संग्रह बुक में अंकित होने पर उन्हें सम्मानित करते हुए बधाई दी है।

उल्लेखनीय है, कि बिहार के पूर्वी चम्पारण जिले के सिकरहना अनुमंडल

अन्तर्गत घोड़ासहन प्रखंड क्षेत्र के ननिहाल गांव बरवाकला में 28 जुलाई 1989 में जन्मे मधुरेन्द्र बचपन से काफी मेधावी और बहुमुखी प्रतिभा के धनी बालक थे। जिन्होंने अपनी लगन और मेहनत के बल पर बहुत कम समय में ही देश दुनिया में अपना नाम कमाया है।

मौके पर उपस्थित पद्मश्री रविन्द्र कुमार सिन्हा, पद्मश्री कपिलदेव प्रसाद सिंह, संपादक ललित कुमार सिंह, मखाना मैन डॉ जनाधर्न, डॉ सतेन्द्र, बिहार के प्रसिद्ध मूर्तिकार साह अमृत प्रकाश समेत सभी गणमान्य अतिथियों ने भी सैड आर्टिस्ट मधुरेन्द्र कुमार को बधाई दी है। इधर मधुरेन्द्र की इस सफलता के लिए पूरे जिले में लोगों ने प्रशंसा व्यक्त की है।

विभिन्न योजनाओं से लोगों को अवगत कराया गया



बीएनएम@केसरिया

विकसित भारत संकल्प यात्रा के तहत भारत सरकार की विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं व कार्यक्रमों से लोगों को अवगत कराया जा रहा है। इस कड़ी में सोमवार को प्रखण्ड क्षेत्र के बथना पंचायत अंतर्गत बिनटोली शक्ति केंद्र पर उपस्थित लोगों को केंद्र सरकार द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं

की जानकारी दी गई। कार्यक्रम के दौरान भाजपा के मोतिहारी विधायक प्रमोद कुमार ने कहा कि केंद्र सरकार गरीबों के उत्थान के लिए पूरी ईमानदारी के साथ काम कर रही है। ताकि गरीबों का विकास हो व ऐसे लोग समाज की मुख्य धारा से जुड़ सकें।

उन्होंने कहा कि भारत सरकार ने उज्ज्वला योजना, पीएम गरीब कल्याण अन्न योजना सहित अन्य जनकल्याणकारी योजनाएं का

सफल संचालन कर लोगों को लाभान्वित कर रही है। कार्यक्रम के दौरान चिकित्सा शिविर का भी आयोजन किया गया। जिसमें इलाज के अलावा आयुष्मान कार्ड बनाने को लेकर रेजिस्ट्रेशन किया गया। इस अवसर पर भाजपा जिला मंत्री शम्भु महतो, मंडल अध्यक्ष मुकेश कुमार यादव, शैलेन्द्र गिरी, राजू खान, देवालाल यादव, सुरेश सहनी सहित अन्य मौजूद थे।

गांधी की भूमि से चरखा का संचालन गायब भुखमरी के शिकार हैं चरखा संचालक

बीएनएम@मोतिहारी

गांधी संग्रहालय में गांधीवादियों एवं समाजसेवियों की एक बैठक पूर्व मंत्री सह सचिव गांधी संग्रहालय बृज किशोर सिंह के अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। बैठक में बताया गया कि सरकार द्वारा दिए गए चरखा का संचालन नहीं हो रहा है।

चरखा वाले कहते हैं कि उनकी आर्थिक स्थिति ऐसी नहीं है जो रूई खरीद कर उसका संचालन कर सके, यही कारण है कि जिले की सारी चरखा बेकार पड़े हुए हैं। बैठक में उपस्थित सभी व्यक्तियों ने इस बात को लेकर चिंता जताई है और सरकार से अनुरोध किया कि उनके लिए रूई, इत्यादि सामग्री खर्च के लिए कुछ राशि का प्रबंध कर दिया जाए ताकि



गांधी की चरखा चालू हो सके और इनसे जुड़े परिवार वालों को एक जीविका का साधन हो सके। उन लोगों ने स्थानीय सांसद एवं

सरकार से इस समस्या के प्रति कुछ करने के लिए अनुरोध किया। इस बैठक में सर्वोदय नेता विनय कुमार सिंह, राजगुरु, त्रिभुवन

सिंह इत्यादि ने सक्रिय रूप से अपनी भूमिका निभाने की वादा की और अंत में विनय कुमार सिंह ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

अपहृता बरामद आरोपी गिरफ्तार

बीएनएम@केसरिया। थाना क्षेत्र के एक गांव से शादी की नियत से अपहृत एक युवती को पुलिस ने बरामद किया है। वहीं मामले में आरोपी युवक को गिरफ्तार किया है। पुलिस निरीक्षक सह थानाध्यक्ष सुनील कुमार सिंह ने बताया कि विगत माह विद्यालय से घर जाने के क्रम में नौवीं की छात्रा का अपहरण हो गया था। इस मामले में अपहृता की माँ ने बैशखवा के अमित कुमार सहित तीन को आरोपित करते हुए मामला दर्ज कराया था। आरोप लगाया था कि शादी की नियत से अमित व अन्य ने युवती का अपहरण किया है। इस मामले में आरोपी युवक अमित को उसके घर से गिरफ्तार किया गया है। बाकी आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए कार्रवाई की जा रही है। उन्होंने बताया कि बरामद युवती को बयान के लिए सोमवार को न्यायालय भेजा गया।

लूटेरे ने चलती ट्रेन से छात्रा को धकेला, पैर कटा

मोतिहारी। बिहार में रविवार को दारोगा बहाली की परीक्षा हुई। इस बीच परीक्षा देने जा रही एक छात्रा के साथ ट्रेन में मानवता को शर्मसार करने वाली घटना को अंजाम दिया गया। बदमाशों ने उसका मोबाइल छिनने की कोशिश की। जब छात्रा ने विरोध किया तो उसे चलती ट्रेन से धक्का देकर गिरा दिया। इस घटना में छात्रा का दाहिना पैर कट गया। छात्रा दारोगा बनने से पहले दिव्यांग बन गई। उसके एक हाथ में भी गंभीर जखम है। घटा पूर्वी चंपारण के सुगौली की है। छात्रा को प्राथमिक उपचार के बाद मोतिहारी रेफर कर दिया गया है। छात्रा की पहचान पलनवा थाना क्षेत्र के ऊँची डीह गांव निवासी प्रमोद पांडेय की पुत्री सलोनी कुमारी (25) के रूप में की गयी है। सलोनी रविवार को रक्सौल मुजफ्फरपुर मेमू गाड़ी 05288 से सुगौली स्थित जगत सिंह कुशवाहा प्रोजेक्ट गर्ल्स हाई स्कूल तुरकौलिया अपने परीक्षा केंद्र पर जा रही थीं। जहां उसे सब इंस्पेक्टर के पद पर आयोजित परीक्षा देना था। सुगौली स्टेशन से ठीक पहले एक बदमाश ने मोबाइल छिनने के दौरान चलती ट्रेन से धक्का देकर गिरा दिया।

M.S. MEMORIAL PUBLIC SCHOOL
(Day Cum Residential)
Registration & Admission Open by Session 2024-2025

Contact No. - 9939042109
9431203674

TRANSPORT FACILITY AVAILABLE

BALGANGA, ARERAJ ROAD, MOTIHARI

अब सही डॉक्टर से सही इलाज कराना है और बिगोहेल्थ से ही नंबर लगाना है।

BigOHealth

सही डॉक्टर, सही इलाज

डाउनलोड करें
BigOHealth App

और मोतिहारी के प्रमुख डॉक्टर के पास घर बैठे फोन से नंबर लगाएं।

844-856-9131
24x7 Medical Helpline

GET IT ON Google Play

समीक्षा: टिकाऊ चमचों की वापसी वैचारिक व्यंग्य संग्रह है

विवेक रंजन श्रीवास्तव, भोपाल



किताब की शुरुवात लेखक के मन में उद्भूत विचारों से होती है. लेखक लिखता है . कम्पोजर कम्पोज कारता है. अक्षर शब्द और शब्द वाक्य बन जाते हैं, भाव मुखर हो उठते हैं. प्रकाशक छापता है. समारोह पूर्वक किताबों के विमोचन होते हैं. समीक्षक चर्चा करते हैं. किताब विक्रेता से होते हुये पाठक तक पहुंचती है. पाठक जब पुस्तक पढ़कर लेखक की वैचारिक यात्रा में बराबरी से भागीदारी करता है, तब किंचित यह यात्रा गंतव्य तक पहुंचती लगती है.

रचना के दीर्घगामी प्रभाव पड़ते हैं. लेखक सम्मानित होते हैं, पाठक रचनाकार के प्रशंसक, या आलोचक बन जाते हैं. अर्थात किताब की यात्रा सतत है, लम्बी होती है. अशोक व्यास व्यंग्य के मंजे हुये प्रस्तोता हैं. टिकाऊ चमचों की वापसी उनकी दूसरी किताब है. सुस्थापित लोकप्रिय, भावना प्रकाशन से यह कृति अच्छे गेटअप में

प्रकाशित है.

सूर्यबाला जी ने प्रारंभिक पन्नों में अपनी भूमिका में पाया है कि लेखक अपने व्यंग्य कर्म में कहिं भी असावधान नहीं है. लालित्य ललित ने संग्रह के व्यंग्य पढ़कर आशा व्यक्त की है कि अपने आगामी संग्रहों में लेखक की चिंताये और व्यापक व अंतर्राष्ट्रीय हों. इस संग्रह में बत्तीस व्यंग्य हैं. पाठको के लिये विषयों पर सरसरी नजर डालना जरूरी है. अंग्रेजी घर पर है?, अजब गजब मध्य प्रदेश, अध्यक्षजी नहीं रहे. अध्यक्ष जी अमर रहें, आइए सरकार, जाइए, आभासी दुनिया का वास्तविक बन्दा, कलयुग नाम अधारा आपका आधार कार्ड, कृत्रिम बुद्धिमत्ता का भारतीय तरीका, कोरोना कल्चर का प्रभाव, कोरोना की कृपा, गोद ग्रहण समारोह, जा आ आ जा आ आ दू!

जा आ आ दू, टिकाऊ चमचों की वापसी, ताली बजाओ ताल मिलाओ, दामाद बनाम फूफाजी, बुरा नहीं मानेंगे... चुनाव है, भारत निर्माण यात्रा, मध्यक्षता करा लो... मध्यक्षता, रंगबाज राजनीति, लिंव आउट अर्थात छोड़ छुट्टा, विश्व युद्ध की संभावना से अभिभूत, सड़क बनाएँ, गड्डे खोदें सतर्क मध्यमार्गी, सत्तर प्लस का युवा गणतन्त्र, साहित्यमति का

बाहुबली साहित्यकार, सेवा के लिए प्रवेश, ज्ञान के लिए प्रस्थान, सोशल मीडिया के ट्रैफिक सिग्नल, हलवा वाला बजट, हाँ. मैं हूँ सुरक्षित!

होली के रंग बापू के संग, ईश्वर के यहाँ जल वितरण समस्या, जैसे दूरदर्शन के दिन फिरे और पोस्ट वाला ऑफिस डाकघर शीर्षकों से हजार, पंद्रह सौ शब्दों में अपनी बात कहते व्यंग्य लेखों को इस पुस्तक का कलेवर बनाया गया है. टाइटिल लेख टिकाऊ चमचों की वापसी से यह अंश उद्धृत करता हूँ, जिससे आपको रचनाकार की शैली का किंचित आभास हो सके. प्लास्टिक के चमचों की जगह फिर धातुओं के चम्मचों का इस्तेमाल पसंद किया जा रहा है, यूज एण्ड थ्रो के जमाने में स्थायी और टिकाऊ चमचों की वापसी स्वागत योग्य है. वह चमचा ही क्या जो मंह लगाने के बाद सफ़ैक दिया जाये ... जैसे स्टील के चमचों के दिन फिरे ऐसे सबकें फिरेँ अशोक व्यास अपने इर्दगिर्द से विषय उठाकर सहज सरल भाषा में व्यंग्य के संपुट के संग थोड़ा गुदगुदाते हुये कटाक्ष करते दिखते हैं.

परसाई जी ने लिखा था बलात्कार कई रूपों में होता है. बाद में हत्या कर दी जाती है.

बलात्कार उसे मानते हैं जिसकी रिपोर्ट थाने में होती है. पर ऐसे बलात्कार असंख्य होते हैं जिनमें न छुरा दिखाया जाता है न गला घोंटा जाता है, न पोलिस में रपट होती है।

अशोक जी ने हम सबके रोजमर्रा जीवन में हमारे साथ होते विसंगतियों के ऐसे ही बलात्कारों को उजागर किया है, जिनमें हम विवश यातना झेलकर बिना कहीं रिपोर्ट किये गुंगे बने रहते हैं. उनकी इस बहुविषयक रिपोर्टों पर क्या कार्यवाही होगी? कार्यवाही कौन करेगा? सड़क पर लड़की की हत्या होती देखने वाला गुंगा समाज? क्वाटस अप पर क्रांति फारवर्ड करने वाले हम आप? या प्यार को कट पीसेज में फ्रिज में रखकर प्रेशर कुकर में प्रेमिका को उबालकर डिस्पोज आफ करने वाले तथाकथित प्रेमी?

हवा के झोंके में कांक्र्रीट के पुल उड़ा देने वाले भ्रष्टाचारी अथवा सत्ता के लिये विदेशों में देश के विरुद्ध षडयंत्र की बोली बोलने वाले राजनेता? इन सब के विरुद्ध हर व्यंग्यकार अपने तरीके से, अपनी शैली में लेखकीय संघर्ष कर रहा है. अशोक व्यास की यह कृति भी उसी अनथक यात्रा का हिस्सा है. पठनीय और विचारणीय है.

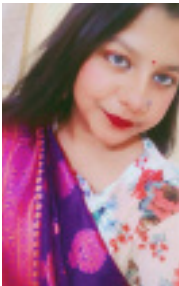


पुस्तक चर्चा

टिकाऊ चमचों की वापसी
अशोक व्यास
भावना प्रकाशन, दिल्ली
संस्करण २०२१
अजिल्द, पृष्ठ १२८, मूल्य १९९ रु
चर्चा... विवेक रंजन श्रीवास्तव, भोपाल



मैं कह सकता हूँ कि टिकाऊ चमचों की वापसी वैचारिक व्यंग्य संग्रह है. अशोक व्यास संवेदना से भरे, व्यंग्यकार हैं. संग्रह खरीद कर पढ़िये आपके आपके आस पास घटित, शब्द चित्रों के माध्यम से पुनः देखने मिलेगा. हिन्दी व्यंग्य को अशोक व्यास से उम्मीदें हैं जो उनकी आगामी किताबों की राह देख रहा है.



ये है जानभी चौधुरी, जो की ओड़िशा की रहने वाली है। ये एक ग्रेजुएट शिक्षक है। इन्हे संगीत गाना, पेन स्केच करना, प्रकृति फोटोग्राफी करना, सबकी मदत करना,

नया कुछ सिखना और नृत्य करना बेहत पसंद है। पहले से इनको लिखना इतना पसंद नहीं था, मगर इनके जीवन में कुछ ऐसा हुआ की, वह डिप्रेशन से गुजरने लगी थी, उनकी मानसिक स्थिति का असर उनके पढ़ाई और तबीयत पर होने लगा, उनकी दशा बहुत बुरी हो गयी थी मगर तभी से उन्होंने लिखना शुरू किया, अपने अंदर के जज़्बातों को कागज में जाहिर करना शुरू किया।

अपने हाल को शब्दों में पिरोना शुरू किया। मगर वह कभी हार नहीं मानी और डटकर अपने परिस्थिति का सामना किया और तब इनके माता-पिता ने ही इनका खोया हुआ आत्मबिस्वास बढ़ाया।

वह कहती है, सब हमे समझाने लगे मगर असर तब हुआ जब हम खुदके साथी बने, खुदसे प्यार करना सीखा और अँधेरे में गिरते-संभलते उसने अकेले रोशनी में चलना सिख ही लिया। और आज उन्हे लिखते-लिखते 3-4 साल हो गए हैं।

वह बिश्वास करती है, जो पहले लिखना

एक लम्बी उड़ान सफलता की ओर



पसंद नहीं करती थी आज उसी लेखन से उसके जीवन को एक नयी दिशा दे दी है और ऐसी कोई जगह नहीं है की, जहाँ उनका लिखन न हो, उन्हे कविता, गद्य, शायरी, मोटिवेशनल स्टोरी और अनुच्छेद लिखना बहुत पसंद करती हैं।

स्टोरी मिरर पर भी उनका लिखन है और वह पॉडकास्ट भी करती है। आज न जाने कितने भटके लोगों को वह रास्ता दिखा चुकी हैं। उनका लक्ष्य है की वह सबकी मदत करें, जिस अवस्था से वह गुजर चुकी है, उससे कोई और न गुजरे

। वह समाज के लिए आज के युवा के लिए अपने लिखन के माध्यम से मदत करना

चाहती है। उनका इंस्टाग्राम पेज है, जहाँ वह 2000+ से ज़्यादा लोगों से जुडी हुई है, अपने लिखन और वॉइस ओवर रील्ल्स के माध्यम से। उनका लक्ष्य है, की वह कभी करोड़ों लोगों की आवाज़ बने, एक मोटिवेशनल स्पीकर बने और लोगों को प्रेरित करें। ये बहुत संकलन में काम कर चुकी है अभी भी कर रही है, बहुत संकलन में ये खुद संकलक भी रह चुकी हैं। इनकी अपनी संकलन है, कलयुग- काल का युग, दिल की बातें (Sarvad Publication), हाल-ए-जदिगी - The Untamned (Brown Page Publication), Culture Vs Modernity (Ek Shayar Ki Baate

Publication), 90's Memories- The Nostalgia Alert (Uniq Publication) और हाली में लांच हुआ है, माँ-एक सच्ची कहानी, एक संघर्ष की निशानी (JEC Publication) और बहुत से समाचार पत्र में भी प्रकाशित हुई है। जैसे की, संस्कार समाचार, The Gram Today समाचार, Redhanded समाचार, हम हिंदूस्तानी USA (एक साप्ताहिक हिंदी बिदेशी समाचार पत्र), Coalfield Mirror समाचार, युग जागरण समाचार, दैनिक रोशनी समाचार, रुहेला टाइगर्स टाइम्स समाचार, दैनिक साहित्य समाचार, इंदौर समाचार, भारत टाइम्स समाचार, इंग्लैंड टाइम्स और राजगीर फ्रंटलाइन समाचार पत्र। इन्हे बहुत पदक, सम्मान पत्र और ट्रॉफी से सम्मानित किया गया है।

विश्वाकाश ग्रंथ रचनाकार के द्वारा सम्मानित पत्र प्राप्ति हुई है इन्हे। विश्वाकाश के चमकते सूर्य 2023 में मिला है इन्हे सम्मान पत्र।

इनकी पुस्तके Amazon, Flipkart पर है और Play Book Store पर भी है। और ये सफलता का श्रेय अपने ईश्वर, अपने पिता-माता और अपने करीबी लोगों को देती है। और बिश्वास करती है की अगर आत्मबिस्वास हो तो इंसान अपनी परिस्थिति का सामना कर, अपनी किस्मत खुद बदल सकता है।

संध्या चतुर्वेदी, मथुरा, उप्र



कैसी यह मुहब्बत

कैसी यह मुहब्बत है दोस्तो

कट रही रोज टुकड़ों में दोस्तों

जब प्यार था तब घर वार छोड़ दिया

आज उस ने ही यार प्यार छोड़ दिया

दिल से उतार फैंक दो उसे तुम

जिसने तुझे दिल से निकाल दिया

सौ टुकड़ों में कटने से अच्छा है

कि अकेले जिंदा रह लेना दोस्तों

जिंदगी जीने की सौ वजह ढूंढ लेना दोस्तों

तुम्हारे साथ जो हो रहा उस से उबर कर

दूसरों के लिए थोड़ा जी लेना दोस्तों

गम न करना मुहब्बत गंवाने का जरा भी

मिलती नहीं यह जिंदगी दुबारा तो

कुछ अपनी फिक्र कर लेना दोस्तों।।

ममता सिंह राठौर कानपुर



कदम भी अपना सफर

मोहब्बत लिखा तो पूछा यह क्या लिखा
नफरतों में यही सवाल किसके लिए लिखा।।

अरे बाबा लिखने दीजिए खुद से जीने दीजिए
मन के विस्तृत आंगन में आने-जाने दीजिए।।

अनुभवों के रंग से जिंदगी रगने दीजिए
अरे बाबा जिंदगी के स्वाद को चखने दीजिए।।

हदों के पार का खामोश देखिए
मोल-तोल के बीच का झोल देखिए।।

अरे देखिए तो सही
जिंदगी का कड़वा कठोर देखिए
कदम भी अपना सफर भी अपना चलते चलिए।।

कही-सुनी कुछ-तुड़ी मुड़ी
मीठी खट्टी मिली जुली
यह जिंदगी किसकी खातिर,
मन के माफिक कौन है साथी।।



अनूप श्रीवास्तव

भरोसा शब्द भले ही तीन अक्षरों का है लेकिन अवसर आने पर यह पूरे त्रिलोक को नाप सकता है, भले ही आप कहें कि इसके पीछे वामनी राजनीति है। 'वामन' का मन्तव्य कभी त्रिलोकेश्वर से रहा होगा, पर अब मन्तेश्वर के इर्द गिर्द सिमट चुका है।

कहते हैं त्रिलोकी नाथ ने जब समुद्र मंथन किया था, रत्न निकलने तक सभी को उनपर भरोसा था लेकिन त्रिलोक सुंदरी और अमृत घट यानी सत्ता सुंदरी और नौकरशाही को हथियाने की नौबत आते ही देव दानवों का भरोसा दो फाड़ हो गया जिसके चलते विष्णु भगवान को भी तमाम पापड़ बेलने पड़े। उन्हें स्वयम सत्ता सुंदरी का मुखौटा लगाना पड़ा। नतीजा यह हुआ कि सत्ता पाने के लिए दोनों पक्ष प्रतिबद्ध हुए। राहु और केतु समझदार निकले उनकी भूमिका आज भी यथावत है। भरोसा उनके बीच कन्दुक की तरह इधर उधर भागता दिखाई दे रहा है।

दरअसल राहु और केतु ही आज की

व्यंग्य: वामन का मंतव्य!

नौकरशाही है जो देव और दानवों को प्रोटोकाल का मुखौटा दिखाकर भरोसेमंद बनी हुई है लेकिन इसी बीच सोशल मीडिया तो प्रोटोकाल का भी बाप निकला और देखते ही देखते खुद को 'किंगमेकर' साबित करने पर तुल गया और इसे साबित करते हुए उसने एक आम आदमी को सड़क से उठाकर राजसिंहासन पर बिठा दिया, यही नहीं एक अच्छे खासे नेता को चाय वाले का चोला पहना कर सत्ता के शिखर पर पहुंचा दिया। वैसे सोशल मीडिया कोई नई ईजाद नहीं है। इसे केवल पत्रकारिता और नौकरशाही का गठजोड़, ऐसी पत्रकारिता जो हवा में गांठ लगाने में माहिर हो।

खबरों के मन माफिक कसीदे काढ़ने में सक्षम हो साथ ही सत्ता में सेंध लगाने में भी माहिर हो। पत्रकारिता का ऐसा अद्भुत मुखौटा देखकर नौकरशाही के भी कसबल ढीले हो गए। नौकरशाही को लगा अगर उसने इस मुखौटे को वाकओवर न दिया तो उनका अपना मुखौटा भी उतर जाएगा। पत्रकारिता

पहले भी ऐयारी थी और आज भी है। सोशल मीडिया का मन्तव्य भी एक तरह से ऐयारी ही है।

इसे इस तरह से समझें-जब राजा भोज की दुनिया भर में तूती बोल रही थी अचानक न जाने किस दुरभि सन्धि से एक किस्सा गोऐयार दूरदराज से प्रकट हुआ और उसने सिंहासन बत्तीसी की बत्तीस कहानियां सुनाकर राजा भोज के आस्तित्व को दीन दुनिया से बाहर कर दिया और किस्सा कहानी के अमूर्त नायक को चक्रवर्ती सम्राट के रूप में प्रतिष्ठित कर दिया। राजा भोज का बज्रू भी नहीं बचा। इतिहास गया तेल लाने। सोशल मीडिया ने यह साबित कर दिया कि उसकी तथाकथित ऐयारी बड़े बड़ों को पानी पिला सकती है। नौकरशाही को भी धूल चटा सकती है। तभी से नौकर शाही के साथ नेताशाही भी नतमस्तक है।

बस एक दूसरे का मुखौटा बचा रहे। भरोसा का भूत सिर पर चढ़ कर बोलता है, न देखता है, न सुनता है, न समझता है, बस हवा में ही

गांठे लगाता रहता है। राजनीति कूटनीति के भरोसे चलती है। पहले भी कूटनीति सेठाश्रयी होती थी और व्याजनीति के भरोसे चलती थी अब बदलते समय मे भरोसा गड्डु मड्डु हो रहा है। सरकारों के भरोसे का भी यही हाल है। एक सरकार पांच साल के भरोसे पर आती है। भरोसा टूटते ही सत्ता के खेल से बाहर होते देर नहीं लगती।

कभी सरकार गरीबों के भरोसे थी सरकार बदली तो राम भरोसे हो गयी। अब हाल यह है कि राम मंदिर बने न बने सरकार उनके नाम पर बनती बिगड़ती रहती है। खैर भरोसा मंदिर पर हो न हो, कभी वह सीबी आई के भरोसे था। अब अदालत के भरोसे पर टिक गया है जो फंस गए वे न्याय की देवी को अंधा बता रहे हैं और जो बच गए वे स्वयम को अदालत की दूरदृष्टि के कायल जता रहे हैं। अब चाहे सूखे का मुद्दा हो या डांस बार अथवा बैंकों के घोटाले का भरोसा दरकता रहता है। जनता का भरोसा कब तक किस पर टिका रहता है यह समय ही बताएगा।

धर्म तक से लोगों के भरोसे पर ग्रहण लगने की स्थिति आ गयी है। विधायिका और न्याय पालिका पर लगते ग्रहण को देखते हुए न्याय

पालिका पर ही भरोसा बचा है। दूसरा और विकल्प भी क्या है। भरोसे के खम्बे में चाहे कितनी ही दरारे हों कहलाता भरोसे का खम्भा ही है। भरोसे का कन्धा न हो तो भरोसे के धंधे का क्या होगा। धंधे का खेल खेलने वालों को भरोसा बनाये रखने की जिम्मेदारी होती है। देश सेवा जब धंधे में बदल गया हो तो अंधे को भी मालुम है कि बिना मेवे के देश सेवा करने का जमाना लद गया। अगर मेवा भी सड़ा निकल गया तो भरोसे को कन्धा बदलते देर नहीं लगेगी। यह दौर ही दूसरा है। अब राजनीति भी कंधे पर बंदूक लेकर चलती है। वे दिन लद गए जब टोपी को लाठी बनाकर कोई नेता निकलता था तो बड़ी से बड़ी ताकतें उसका लोहा मानती थी। उसकी टोपी लाठी को भी मात करती थी।

अब राजनीति भले ही कितनी ही मजबूत हथियारों से समृद्ध हो गई हो पर वह भरोसे की लाठी कहीं भी नज़र नहीं आ रही है। उल्टे भरोसे पर गाँठपर गांठ लगती जा रही है। भरोसा किस घाट जाकर लगेगा? खुदा खैर करे!

सी पी 5,सेक्टर सी अलीगंज पत्रकार कालोनी लखनऊ। मो. 9335276946

शाहाना परवीन शान



...बेवा, राँड, मृतभर्तृका व विधवा आदि नामों से जाना जाने वाला यह शब्द अपने गंभीर व सोचनीय प्रश्न लिए सदियों से समाज में कलंक के साथ जी रहा है। विधवा से तात्पर्य उस स्त्री से है जिसका पति मर चुका हो। एक महिला जिसके पति की मृत्यु चाहे कभी भी हुई हो पर उस स्त्री के माथे पर एक कलंक लग जाता है कि इसका पति मर चुका है और वह बिना पति की है। अब यह स्त्री पूर्ण रुप से बेकार है या यह भी कहा जा सकता है कि बिना पति स्त्री रद्दी है।

जिस प्रकार एक पुरुष का अपना अस्तित्व होता है उसी प्रकार एक पत्नी का भी अपना स्वयं का अस्तित्व है, फिर उसे पति के जीवन के साथ क्यों जोड़ा जाता है? क्यों बार बार उसे यह अहसास करवाया जाता है कि जब तक पति जीवित था तब तक उसकी पहचान थी, पति के मरते ही सब कुछ खत्म? विधवा शब्द कहकर सम्बोधित क्यों करें? यदि एक स्त्री का पति मर जाता है तो उसे लोगों द्वारा विधवा कहकर क्यों सम्बोधित किया जाता है? अरे भाई! जब पति की अपनी पत्नी मर जाती है

और वह विधुर हो जाता है तब उसे तो कोई विधुर नहीं कहता फिर एक स्त्री को क्यों बार बार विधवा कहकर कमजोर बना दिया जाता है? या यह अहसास कराया जाता है कि वह अब बहुत क्षीण हो चुकी है।

यदि इसका भावनात्मक रुप देखा जाए तो विधवा शब्द एक पत्नी को पति को खो देने के बाद उसके जीवन के सबसे भारी नुकसान की ओर इशारा करता है। देश के कुछ हिस्सों में बल्कि कहना चाहिए कि शायद दुनिया भर में विधवाओं के साथ बर्बरता पूर्ण व्यवहार किया जाता है। विधवा स्त्री के लिए कपड़े भी निश्चित कर दिए जाते हैं: विधवा स्त्री के लिए कपड़े भी निश्चित कर दिए जाते हैं कि उन्हें क्या पहनना है और क्या नहीं जबकि एक विधुर पति के लिए इस प्रकार की कोई रोक-टोक देखने को नहीं मिलती कि उसे क्या पहनना है और क्या नहीं पहनना?

विधवा घर के बाहर कदम रखती है तो लोगों के द्वारा अपने घरों व खिड़कियों से झांक कर देखा जाता है जबकि विधुर पर कोई ध्यान नहीं देता। सफेद कपड़े पहने और माथूसी में लिपटी महिलाओं के चेहरे की उदासी किसी को दिखाई नहीं देती। हाँ, दिखाई देता है तो विधवा

होकर किसी गैर पुरुष से उसका बात कर लेना, विधवा होकर किसी के साथ हंस-बोल देना, विधवा होकर स्वतंत्रता के साथ जी लेना। क्यों ऐसा है कि विधवाओं को कोई कुछ नहीं समझता?

अरे! वे पहले एक इंसान हैं बाद में विधवा है। विधवा होना कोई पाप तो है नहीं फिर घृणा कैसी? इतना भेदभाव क्यों? एक किस्सा याद आ रहा है सुनंदा का विवाह पांच साल पहले दीपक के साथ हुआ था। दोनो एक बस दुर्घटना में घायल हो गये थे पत्नी बच गई और पति की कुछ दिनों के बाद मौत हो गई। सुनंदा को अभागन का नाम देकर घर से बाहर विधवा आश्रम में भेज दिया गया। कोई पूछे कि सुनंदा की गलती बताओ, अपराध बताओ, क्या किसी के पास इस बात का कोई उत्तर है? अगर हो जाता विपरीत तो क्या विधुर पति को भी घर से बाहर भेज दिया जाता? उसे भी विधुर आश्रम में रखा जाता? पर एक क्षण के लिए यदि हम सोचें तो विधुर आश्रम तो कहीं है ही नहीं? विधवा स्त्री की छवि शुरू ही से ऐसी बना दी जाती है कि वह दूर खड़ी सबसे अलग दिखाई पड़ती है। कोई उससे ढंग से बात नहीं करना चाहता, गले लगाना या गले मिलना तो

दूर कहीं कहीं पर तो उसे घर में आने की इजाजत नहीं होती बल्कि उसे वैवाहित स्त्रियों से अलग रखा जाता है। उसको मांगलिक कार्यों में शामिल नहीं होने दिया जाता। यहाँ तक की अपनी बेटी के विवाह तक में विधवा मां शामिल नहीं हो सकती। किसने बनाए ये नियम? कौन है इसका कर्ता धर्ता? कोई पुरुष है या कोई स्त्री? अगर कोई है तो इतना बताए कि ये नियम क्यों व कब बनाए गए? इसमें भेदभाव क्यों किया गया? जब एक स्त्री को त्रासदीपूर्ण जीवन जीने को बाध्य किया जाता है तो पुरुष को क्यों नहीं? विधवा स्त्री अपने पहनावे से भीड़ में अलग दिखाई पड़ जायेगी पर विधुर पुरुष की क्या पहचान है? विधुर को कोई कैसे पहचानेगा?

उसे न तो इस तरह संबोधित किया जाता है और न ही वह अपनी पत्नी को खोने के बाद अपने पहनावे को बदलता है। हमारा प्रश्न आप सबसे यही है कि क्या यह आवश्यक है कि 'पत्नी' को 'विधवा' कह कर सम्बोधित किया जाए? जबकि अपने पति को खो देने के बाद भी वह एक पत्नी बनी हुई है। सभी रूपों और औपचारिकताओं में अपने पति के नाम को अपने से चिपकाए हुए हैं। किसी भी स्त्री के घर

के पते या बैंक की किताब या स्कूल आदि पर जीवित पति का तो नाम लिखा ही होता है पति के मरने के बाद भी वह नाम स्त्री से जुड़ा रहता है। जिस महिला का पति मर चुका हो उसको पति के नाम के साथ ही सम्बोधित किया जाता है उदाहरण,, पत्नी स्वर्गीय श्री....की।

यहाँ हमारे कहने का तात्पर्य केवल इतना है कि जब मरने के बाद पति पत्नी से प्रत्येक क्षेत्र में जुड़ा है तो यह विधवा शब्द का सम्बोधन क्यों? सफेद वस्त्र क्यों? आप सब लोग जो इस लेख को पढ़ रहे हैं ज़रा एक क्षण के लिए सोचिए और विचार कीजिए कि ऐसे में एक विधवा स्त्री को समर्थन की आवश्यकता है, सहानुभूति की नहीं। स्वतंत्र हर इंसान हैं फिर विधवा क्यों नहीं? आजादी के साथ जीने का अधिकार सबके पास है। नारी जब स्वतंत्र होगी तभी इस समाज व संसार का मुकाबला कर पायेगी। अब उन विधवा महिलाओं के सामने दो तरह की जिम्मेदारी आ चुकी हैं पति की भी और अपनी तो हैं ही उसके पास।

विधवा नारी नहीं कमजोर, उसको शक्तिशाली बनाना होगा। समर्थन देंगे जब सब मिलकर बेकार नियमों को हटाना होगा। शक्ति का रुप समझी जाती नारी फिर चाहे हो जैसी भी, विधवा हो या हो सधवा, हर परिस्थिति में उसका साथ निभाना होगा। गहरा प्रश्न आप सबसे मेरा....

अनकही कहानी – एक भूरी नारी

बचपन हमने देखा बड़ी मुश्किल से है, कोई लड़की हुई है सुनके दफना देता है, कोई लड़की हुई है सुनके जीते जी मार देता है।

बचपन से जब बाल्यावस्था आए, कोई लड़की बाल मज़दूर का काम कर रही है, तो कोई सड़क पर झोली फैलाये एक पैसे के लिए तरस रही है।

बाल्यावस्था से यौवनावस्था जब आए, तो देखा पढ़ने के ज़माने में छोटी बच्ची किसी का घर संभाल रही है, कहीं वर्तन धो रही है तो कहीं कोई रास्ते पर धक्के खा रही है।

यौवनावस्था से प्रजनन आयु जब आए, जब मासिक धर्म शुरू होता है उसका दर्द जैसे प्रेनैट के दर्द सा होता है, कोई रंग रूप को देखते हैं तो कोई आपके जीवन में अपनी नाक घुसाते हैं। समाज ताना कस्ते हैं और आजकल कहीं बाहर जाने का डर रहता है, कहीं ससुराल मारते हैं तो कहीं कोई समझता नहीं है।

प्रजनन आयु के बाद जब प्रसव अवस्था में आए,

जाननी चौधरी ओड़िशा।



प्रेनैट अवस्था में एक इंसान के अंदर एक नन्ही सी जान बस्ती है, उस बीच का दर्द जो है 9 महीने का और उसके बाद प्रेनैसी के वक़्त जो दर्द मानो की 206 हड्डियां टूट रही हो, जैसे लगता है।

प्रेगनेंसी के बाद जब माँ बन जाते है, तब अपने लिए कुछ नहीं मगर सब परिवार और बच्चों के लिए केवल करती है। इसलिए माँ के शब्द में संसार बस्ता है।

जब वही माँ बूढ़ी हो जाती है, तो बच्चे धक्के खाने के लिए कहीं सड़क पर छोड़ देते हैं, या तो वृद्धाश्रम में छोड़ जाते है, कोई अनादर करता है कोई जुर्म करता है।

मरने के अवस्था में आयु जब आए, तब न पूछने वाले भी दिखावा कर जाते हैं, मरने के बाद जो बेटे पूछते नहीं वही सिर्फ़ 4 कंधा देने आ जाते हैं।

जीवन एक स्त्री की न कभी सरल थी न कभी है, ज़माना है बुराइयों और अत्याचारों का? यहाँ एक बेटी को अच्छे से बड़ा करना भी बहुत कठिन है।

रीमा पांडेय कोलकाता

ग़ज़ल

यहाँ मुश्किल भरी राहों को अब आसान क्या करते, पड़े थे पाँव में छाले रहें अंजान क्या करते।

अकेले ही बचा लाई मैं कश्ती के मुसाफ़िर को मिरी हिम्मत के आगे दोस्तो तूफ़ान क्या करते।

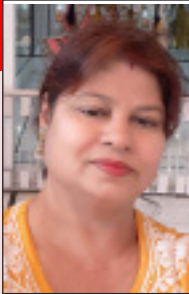
नहीं आसां है पढ़ लेना हरिक कागज़ के टुकड़े को भला तस्वीर में इंसान की पहचान क्या करते

बचाया है इसे ग़म से सहारा भी न तेरा है, भला फिर अपना दिल तेरे पे हम कुर्बान क्या करते।

कभी मांगा नहीं कुछ भी वो ऐसा ही अनोखा था, वो था खुद़र तो उसपे कहो अहसान क्या करते।

कभी पूरे नहीं होते मचलते ही ये रहते हैं तो रख कर अपने दिल में हम हसीं अरमान क्या करते।

चले जाना है रीमा एक दिन सब छोड़कर सबको सजा कर क़ीमती घर में भला सामान क्या करते।



ना कहना भी है एक कला है

श्याम कुमार कोलारे



हर कोई चाहता है कि वह हमेशा हर किसी का चाहेता बना रहे, हर कोई उसके काम की तारीफ करे एवं उसकी सराहना करे। इसलिए वह उसको दिए गए काम एवं जिम्मेदारी को हमेशा से पूर्ण इमानदारी एवं लगन के साथ के साथ करता है और चाहता है इसका हमेशा उसको श्रेय मिले साथ ही साथ सभी के सामने उसके काम की प्रशंसा हो। परन्तु कभी आपने सोचा है सभी को खुश रखने के चक्कर में आप पर हमेशा जिम्मेदारियाँ बढ़ा दी जाती है, आप कोई भी काम को सहर्ष स्वीकार कर लेते है इसलिए आपको ही काम के लिए हमेशा चुना जाता है। आप हमेशा काम वगैर कोई न-नुकर करे स्वीकार कर करने लगते है, आपको और अन्य काम की जिम्मेदारी सौंप दी जाती है, पहले से आपके पास काम की एक लम्हैबी लिस्ट है, आपको और अतिरिक्त काम का बोझ डाल दिया जाता है।

किसी भी काम के लिए हमेशा हाँ कहना यानि अपने आप को और अधिक समय के लिए काम से जोड़ लेना है। अतिरिक्त काम करना गलत नहीं है परन्तु यदि हमें पता है कि इससे हमें कोई विशेष फायदा नहीं होने वाला है, इससे केवल समय, शक्ति और उत्साह का हनन ही होना है तब भी काम करते रहना यह स्वयं को थकाने जैसा कार्य होता है। इससे काम करने वाला व्यक्ति अपने निजी पलो को भी प्रोपेस्नल कामो में लगा देता है और पर्सनल जीवन को अपने जाँब या नौकरी में लगा कर अपने स्वयं के सुखद पलो को खोते रहता है। हमें रोज़मर्रा के जीवन में निरंतर दूसरों के अनुरोध का सामना करना पड़ता है। दूसरों की मदद करना भले ही अच्छी आदत कहलाती है

वीरेंद्र बहादुर सिंह



इक्यान्न्वे साल की उम्र में अचानक आई इस व्याधि से वह आकुल-व्याकुल हो उठे। तकलीफ विचित्र थी। सुबह उठने के साथ ही उन्हें अपना नाम ही नहीं याद आ रहा था। लगभग दो घंटे तक वह कमरे में इधर से उधर चक्कर लगाते रहे। मर चुकी पत्नी भी 'कहती हूँ' कह कर ही बुलाती थी, इसलिए उसने भी कोई नाम दिया हो, याद नहीं आ रहा था।

स्वर्गस्थ पत्नी के फोटो के नीचे उसके नाम के पीछे उनका नाम था। परंतु पिछले साल फोटो के पीछे चले गए बरसात की पानी की वजह से उस जगह इस तरह के दाग पड़ गए थे कि नाम पढ़ने में ही नहीं आ रहा था। जबकि पढ़ने में भी आ रहा होता तो अनपढ़ आंखें पढ़ ही कहां पातीं। गांव के अपने घर में होते तो किसी से पूछ लेते। पर इस समय तो वह बेटे के घर शहर में थे। यहां तो ज्यादा लोग उन्हें पहचानते भी नहीं थे।

विदेश कमाने गए बेटे के उसकी कर्कश

लेकिन लगातार ऐसा करते रहने से हम पाते है कि अपनी जरूरतें पूरी करने के लिए हमारे पास समय नहीं रह जाता है। इस तरह के कार्य करते रहने से हमारे भीतर हताशा पैदा होने लगती है। 'न' एक सरल शब्द है जो महज एक अक्षर का है लेकिन ज्यादातर लोगों के लिए 'न' उच्चारण कर पाना कठिन होता है। जबकि हम सभी जानते है कि 'न' कह देने से हम जीवन की अनेक कठिनाइयों से बच सकते हैं।

जतिन एक निजी कम्पनी में काम करता है, कम्पनी की तरफ से उसे फील्ड के दैनिक काम निर्धारित है, वह अपनी कम्पनी की तरफ से दी गई जिम्मेदारी के काम को भलीभांति पूर्ण निष्ठा के साथ करता है जिससे उसके बॉस के सामने उसकी अच्छी इमेज है। वह सब कम समय पर करता है बॉस को उस पर पूर्ण विश्वास है कि वह किसी भी काम को अच्छे से कर सकता है। कम्पनी में एक प्रोजेक्ट आता है, इस काम का पूर्व अवलोकन करने के लिए लोगो का चयन में जतिन एवं उसी के जैसे काम करने वाले लोगो का नाम आगे आता है, जतिन को इस नया काम की अतिरिक्त जिम्मेदारी दी जाती है। हमारे आसपास ऐसे कई उदाहरण मिल जायेंगे जो अपने काम से संतुष्ट न होने से अवसाद का शिकार हो जाते है। अच्छे काम के लिए पहले जो जाने जाते थे अब उस काम में उनकी रुचि नहीं लगती है। आखिर यह सब हुआ “ना” नहीं कहने के कारण। हर काम के लिए हमेशा “हाँ” कह देना आप पर न केवल काम का बोझ बढ़ाएगा बल्कि आपको ऐसे कार्य भी करने होंगे जिनको करना आप पसंद नहीं करते है। आपको समझना होगा कि आपका समय और बहुमूल्य उर्जा सीमित है और आपको इसकी अहमियत देनी होगी। कई बार लोग अपनी छवि खराब होने के डर से किसी भी कार्य को “न” नहीं कह पाते है। लेकिन आपको यह समझना होगा कि काम करने के लिए “हां” कहने के बाद समय की कमी के चलते काम खराब होता है तो इससे आपकी छवि अधिक

खराब होगी। कई स्थानों पर आपके पास “ना” कहना आसान नहीं होता है। सबसे पहले तो हमें बहुत ही सभ्य तरीके से किसी कार्य के लिए मना करना चाहिए। साथ ही मना करने का उचित व तार्किक कारण भी बताया जाना जरूरी है। आइये कुछ ऐसे तरीकों को जानते है जिससे आप इस परेशानी को थोड़ा कम कर सकते है-

दोस्तों के दबाव से बचे

अक्सर हम दोस्ती रिश्तेदारी, आत्मविश्वास की कमी या दुविधा के कारण दूसरों की बातें मान लेते हैं। जैसे “पार्टी में दोस्तों के कहने पर मैंने भी एक पैग ले लिया। ऑफिस के लोग बाहर खाना खाने जा रहे थे, तो मैं भी चला गया, अब बजट गड़बड़ हो गया।” इन सब परिस्थितियों में दूसरों की बात मानी, अगर चाहते तो, शालीनता से मना भी कर सकते थे। ना कहने का मतलब है अपने खुद के लिए खड़े होना। कुछ बातों में ना करके आप अनचाही परिस्थितियों में फंसने से बचते हैं, इससे आत्मविश्वास बढ़ता है।

अपनी ऊर्जा को बचाए रखें

कई बार हम दूसरों को खुश करने की लिए उनकी बात के लिए हामी भर देते है और बाद में सोचते हैं कि ना कह देते तो ज्यादा अच्छा होता। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि हम ना को नकारात्मक भाव से जोड़ते है। ऐसा करने से हम अपना समय खुद ही बर्बाद करते हैं। अपने समय, निजता और ऊर्जा को बचाने का आसान और सीधा तरीका है ना कहना। ना को किस जगह कैसे फिट करना है, यह आप पर निर्भर करता है। जैसे पढ़ाई करते समय फोन चलाना, फेसबुक या व्हाट्सएप पर से ध्यान हटाना, भोजन को मन से खाने के लिए फोन को दूर रखना, वजन कम करना है, किसी की बातों में ना आकर अपने विवेक से कम लेना, अपना समय एवं रूचि को ध्यान में रखते हुए कार्य करना।

लघुकथा: मेरा नाम क्या है

बहू थी। अगर उससे पूछ लेते तो वह इस तरह बात का बतंगड़ बनाएगी कि सोच कर ही उन्हें चक्कर आ गया। बेटे को विदेश फोन लगाया और जैसे ही पूछा कि मेरा नाम क्या है? वहां तो जब चाहे फोन लगा कर पूछने के बदले जो सुनने को मिला कि... पर नाम का पता नहीं चला। खूब सोच-विचार कर छोटे पोते को पास बुला कर पूछा, बाबू, तुम्हें मेरा नाम पता है?

उसने हां में सिर हिलाया। पर नाम बोलने के लिए चाकलेट की खातिर दस रुपए मांगे। दस की नोट पकड़ा कर अपना नाम पूछा तो जवाब मिला, दादाजी।

अरे यह नहीं, मेरा नाम बोलो।

हां, वही तो कह रहा हूं। आप का नाम दादाजी है। मैं तो यही तो कह कर बुलाता हूं। कह कर पोता भाग गया।

इसी चिंता में वह घर के बाहर निकले तो सामने मिठाई की दुकान वाले ने 'नमस्कार' किया। बड़ी उम्मीद के साथ वह दुकान पर पहुंचे और सकुचाते हुए पूछा, भाई, तुम्हें मेरा नाम मालूम है?

जवाब में दुकानदार ने जोर से हंस कर

कहा, आप भी न, सालों से आप को चाचा कहता आ रहा हूं तो आप का नाम जान कर क्या करना है।

गांव से बचपन के दोस्त का फोन आया। फोन रिसीव होते ही उसने पूछा, पप्पू मजे में है न?

उन्हें खुशी हुई, लगा कि उनका नाम पप्पू है। कन्फर्म करने के लिए पूछा तो दोस्त ने कहा, उम्र की वजह से ठीक से याद नहीं। पर पप्पू तेरी कसम, नाम तो तेरा कोई दूसरा है, पर मैं तो बचपन से तुझे पप्पू ही कहता आ रहा हूं। दोस्त की इस बात से वह और चिढ़ गए। मैं भी कैसा आदमी हूं कि अपना नाम भी याद नहीं है। इसकी अपेक्षा तो मर जाना ठीक है।

बड़ी मेहनत से वह छत पर गए। वह छलांग लगाने जा रहे थे कि उनके फोन की घंटी बजी। फोन उठाते ही दूसरी ओर से कहा गया, रामप्रसादजी, आप को लोन चाहिए? यह सुन कर रामप्रसाद मुसकरा उठे।

जेड-436ए, सेक्टर-12,
नोएडा-201301 (उ.प्र.)
मो- 8368681336

©सरस्वती धानेश्वरभ, भिलाई, छत्तीसगढ़

एहसास

अलहदा है अकेले पन का सुकून,
अनोखा रहस्यमय आभास,
कई रक्तिम आभाओं को समेटे
बांधे रखता है खुद से खुद को !
कई भूली बिसरी यादें,
कुछ सिमटी सी परछाइयां,
थम सी जाती है जहन में,
दर्पण की मानिंद निहारती है खुद को,
दे जाती है कई सपने,
और आंखों में घूम जाती है एक सुनहरी सदी !
यादों के भंवर लेकर बदल जाते हैं मन के पलचिन्ह,
अनवरत कारवां गुजर जाता है पहरों तक,
समय का ठहराव रुकता नहीं, न रूठना,
न मनाना बस अंतर्द्वंद्व का निश्छल बहते जाना !
जिज्ञासा मंद पड़ जाती है,
तृष्णा शनैः स्वतः शांत हो जाती है,
न पाना न खोना, न मिलना, न बिछड़ना,
जिंदगी का बस यूं ही चलते जाना !



डॉ. सत्यवान 'सौरभ'

हारा-थका किसान

बजते घुंघरू बैल के, मानो गाये गीत।
चप्पा-चप्पा खिल उठे, पा हलधर की प्रीत।।
देता पानी खेत को, जागे सारी रात।
चुनकर कांटे बांटता, फूलों की सौगात।।

आंधी खेल बिगाड़ती, मौसम दे अभिशाप।
मेहनत से न भागता, सर्दी ही या ताप।।
बदल गया मौसम अहो, हारा-थका किसान।
सूखे-सूखे खेत हैं, सूने बिन खलिहान।।

चूल्हा कैसे यूं जले, रही न कौड़ी पास।
रोते बच्चे देखकर, होता खूब उदास।।
ख़वाबों में खिलते रहे, पाले सरसों खेत।
धरती बंजर हो गई, दिखे से ही रेत।।

दीपों की रंगीनियाँ, होली का अनुराग।
रोई आँखें देखकर, नहीं हमारे भाग।।
दुख-दर्दों से है भरा, हलधर का संसार।
सच्चे दिल से पर करे, ये माटी से प्यार।।

(सत्यवान 'सौरभ' के चर्चित दोहा संग्रह 'तितली है खामोश' से।)

नमिता गुप्ता मनसी, मेरठ

ये अधूरे प्रेम-पत्र..

हैरत की बात है न
जब भी लिखना चाहा
आसमां ने
एक प्रेम-पत्र
धरा के लिए,
कुछ लिख ही नहीं सका
बस, पिघल गया
बारिश बनकर,
शायद इसीलिए
धरा भी लिखती रही
सभी असम्प्रेषित खतों के जवाब
हरी चुनर पहनकर
चुपचाप ही !!

सुनों..
इसी आपसी लिखावट में
खोजते चले आ रहे हैं
हम-तुम
अपना-अपना प्रेम
सदियों से अब तक !!



यूं भी
कितना सुखद होता है न
कभी-कभी
कुछ न लिख पाना
किसी के लिए,
और.. पढ़ा जाना
उसके द्वारा
सारा का सारा
वो अलिखा भी !!

तो हैं न कितने खूबसूरत
ये अधूरे प्रेम-पत्र
अपने संपूर्ण प्रेम के साथ !!

ये एक्सरसाइजेस आपको रखेंगी फिट और स्मार्ट

अपने स्वास्थ्य को लेकर हम सभी कुछ नई और अच्छी हैबिट्स अपनाने की सोचते हैं जिसमें फिटनेस सबसे टॉप पर होता है लेकिन कैसी एक्सरसाइजेस से इसकी शुरुआत करें ये समझ नहीं आता। किसी को अपना पेट कम करना है तो किसी को वेट, वहीं किसी को बाइसेप्स बनाने हैं तो किसी को ओवरऑल बॉडी टोन करनी है। इसकी वजह से और ज्यादा कन्फ्यूजन हो जाती है।

तो अगर आपने भी खुद को फिट रखने का वादा कर लिया है, तो हम आपको सजेस्ट करेंगे कुछ ऐसे ईजी वर्कआउट्स, जो आपको फिट एंड फाइन रखने के साथ ही अपर से लेकर बॉडी तक के लिए हैं बेहद फायदेमंद। तो डाइट के साथ इन एक्सरसाइजेस को भी बनाएं अपने रूटीन का हिस्सा। जिसका असर आपको अपनी बॉडी पर कुछ ही दिनों में नजर आने लगेगा।

कई बीमारियां दूर रहेंगी और आप लंबे



समय तक स्वस्थ जीवन जी सकेंगे।

जंपिंग जैक

जंपिंग जैक बेसिक लेकिन बेहद फायदेमंद एक्सरसाइज है। इस एक्सरसाइज को करने से वजन तो तेजी से कम होता ही है साथ ही थाईज़ भी स्ट्राना होती हैं। पेट की चर्बी कम होने लगती

है। इस एक्सरसाइज को करने से पहले हाथ और पैरों की हल्की-फुल्की स्ट्रेचिंग जरूर कर लें, जिससे इंजुरी की संभावना कम हो जाती है।

स्किपिंग रोप

रस्सी कूदना भी आसान एक्सरसाइज में



जाने के बाद आप इसे बढ़ा भी सकते हैं। एक सेट में कम से कम 30 से 50 बार जंप करने की कोशिश करें।

स्क्वाट जंप

स्क्वाट जंप भी ओवरऑल बॉडी को टोन करने

शामिल है। इसका असर भी आपको काफी कम दिनों में देखने को मिल सकता है। इसके रोजाना दो से तीन सेट्स करने की को शि श करें। अच्छी प्रैक्टिस हो

वाली बेहतरीन एक्सरसाइजेस में से एक है। इसे करने से बॉडी में ब्लड का सर्कुलेशन सही तरह से होता है। जिससे कई सारी समस्याएं दूर रहती हैं, साथ ही कम समय में अच्छी-खासी कैलोरीज़ बर्न की जा सकती है।

सर्दियों में वर्कआउट करने का बेस्ट टाइम

सर्दियों के मौसम में भी वर्कआउट करने का बेस्ट टाइम सुबह ही है। इसकी वजह है कि सुबह एक्सरसाइज कर लेने से पूरे दिन शरीर में एनर्जी बनी रहती है।

वर्कआउट करने से शरीर में एंडोर्फिन हार्मोन रिलीज होता है, जो पूरे दिन आपको एक्टिव रखने में मदद करता है। ठंड में सुबह उठकर कसरत करने के लिए आलस्य छोड़ना थोड़ा मुश्किल होता है, लेकिन अपने हेल्थ को ध्यान में रखते हुए, एक्सरसाइज के लिए सुबह का समय ही चुनें।

जोड़ों के दर्द को दूर करने के लिए रोजाना करें मकरासन

आजकल जोड़ों में दर्द आम समस्या है। इस स्थिति में व्यक्ति को जोड़ों में कम या तेज दर्द होता है। कभी-कभार यह दर्द असहनीय हो जाता है। इस वजह से चलने, उठने और बैठने में दिक्कत होती है। हेल्थ एक्सपर्ट्स की मानें तो शरीर में कैल्शियम और विटामिन डी की कमी की वजह से जोड़ों में दर्द होता है। इसके अलावा, थकान, चोट और बढ़ती उम्र के चलते भी जोड़ों में दर्द होता है।

इस बीमारी से वयस्क अधिक प्रभावित होते हैं। हालांकि, आजकल कम उम्र के लोगों में भी गठिया के लक्षण देखे जाते हैं। अगर आप

भी जोड़ों में दर्द से परेशान हैं और इससे निजात पाना चाहते हैं, तो रोजाना योग और एक्सरसाइज करें। योग के कई आसन हैं। उनमें एक मकरासन है।

इस योग को करने से जोड़ों में दर्द की समस्या से निजात मिलता है। आइए, मकरासन के बारे में सबकुछ जानते हैं-

मकरासन

मकरासन दो शब्दों मकर और आसन से मिलकर बना है। आसान शब्दों में कहें तो मकर की मुद्रा में बैठना मकरासन कहलाता है।

यहां मकर का तात्पर्य मगरमच्छ से है। मगरमच्छ शांत चित से नदी में लेटा रहता है।



इस योग को करने के दौरान मगरमच्छ के समान शांत चित होकर लेटना रहता है। इस योग को करने से जोड़ों के दर्द में आराम मिलता है। साथ ही तनाव से भी राहत मिलता है। इसके अलावा, बढ़ते वजन को भी कंट्रोल करने में मदद मिलती है।

मकरासन कैसे करें

इसके लिए सबसे पहले जमीन पर दरी बिछाकर पेट के बल लेट जाएं। इस योग को खाली पेट करना फायदेमंद होता है। अब दोनों कोहनियों को जमीन पर फैलाकर सोने की मुद्रा में आ जाएं। आसान शब्दों में कहें तो अपने सिर को दोनों हाथों पर रखें। वहीं पैरों के

बीच दूरी बनाकर रखें।

इसके अलावा, आप कोहनियों को जमीन पर टीका कर आगे की ओर मुख कर ध्यान मुद्रा में भी मकरासन कर सकते हैं। इस दौरान अपने पैरों की उंगलियों को जमीन से स्पर्श करें। आप इस मुद्रा में मगरमच्छ की भांति विश्राम करते हैं।

मानसिक थकान को दूर करने के लिए आजमाएं ये आसान टिप्स

क्या आप हमेशा थका हुआ और ऊर्जाहीन महसूस करते हैं? क्या आपको लंबे समय से तनाव का अनुभव हो रहा है? अगर हां, तो यह मानसिक थकान का संकेत हो सकता है। आजकल की भागदौड़ भरी जिंदगी में मानसिक थकान होना आम बात है। व्यस्त जीवनशैली में हम अक्सर कई चीजों को एक साथ निपटाने की कोशिश करते हैं। लंबे समय से काम और तनाव के कारण शरीर के साथ-साथ हमारा दिमाग और मन भी थक जाता है।

अक्सर लोग मानसिक थकान को नजरअंदाज कर देते हैं, लेकिन ऐसा करना आपकी शारीरिक और मानसिक समस्याएं बढ़ सकती हैं। तो अब सवाल यह उठता है कि मानसिक थकान को कैसे दूर करें? आज हम आपको मानसिक थकान को दूर करने के उपाय बताने जा रहे हैं

1. धूप में बैठें

अगर आप हर समय खुद को थका हुआ महसूस करते हैं, तो रोजाना थोड़ी देर धूप में बैठें। यह खुद को रिचार्ज करने का सबसे सरल

तरीका है। सूरज की रोशनी से हमारे शरीर और दिमाग पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। रोज धूप में बैठने से शरीर में विटामिन डी की आपूर्ति होती है, जिससे आप ऊर्जावान महसूस करते हैं। इसके लिए दिन में कम से कम 30 मिनट के लिए धूप में जरूर बैठें।

2. अच्छी और गहरी नींद लें

मानसिक थकान को कम करने के लिए अच्छी और गहरी नींद बहुत जरूरी है। नींद पूरी न होने के कारण आपकी मानसिक थकान बढ़ सकती है। इससे बचने के लिए पूरे दिन में कम से कम 8 घंटे जरूर सोएं। अगर आपको नींद से

जुड़ी कोई परेशानी है, तो डॉक्टर से संपर्क करें।

3. ब्रेक लें

लगातार काम करते-करते आपका शरीर ही नहीं, दिमाग भी थक सकता है। मानसिक थकान के कारण आपको किसी भी काम पर फोकस करने में कठिनाई हो सकती है। ऐसे में, दिमाग की थकान मिटाने के लिए काम के बीच में कुछ छोटे-छोटे ब्रेक लेना मददगार हो सकता है। इसके लिए थोड़ी देर के लिए काम से दूर हो जाएं और बॉडी की स्ट्रेचिंग करें। इस समय में आप एक कप कॉफी या अपने पसंदीदा संगीत का आनंद ले सकते हैं। ब्रेक लेने से आप खुद को रिलैक्स और रिफ्रेश महसूस करेंगे।



4. व्यायाम करें

मानसिक तनाव से बचने के लिए अपने रूटीन में व्यायाम को शामिल करें। रोजाना व्यायाम करने से शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ महसूस करेंगे। इसके लिए रोजाना कम से कम 30 मिनट व्यायाम करने की कोशिश करें।

इससे आपकी मानसिक थकान कम होगी और आप खुद को ऊर्जावान महसूस करेंगे। आप रोजाना ध्यान और योग का अभ्यास भी कर सकते हैं।

5. इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों से ब्रेक लें

आजकल की डिजिटल दुनिया में हमारा ज्यादातर समय इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों के साथ गुजरता है। दिनभर मोबाइल और लैपटॉप आदि से जुड़े रहते हैं। इससे हमारा शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य बुरी तरह प्रभावित होता है। मानसिक थकान से बचने के लिए टेक्नोलॉजी से ब्रेक लें। खुद को कुछ समय के लिए इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों से दूर करके आप मानसिक तौर पर फ्रेश महसूस करेंगे।